आज़ादी का
अमृत महोत्सव

DR. BHIM RAO AMBEDKAR COLLEGE
(University of Delhi)

Main Wazirabad Road, Yamuna Vihar, Delhi-110094, Phones: 22814126, Telefax: 22814747
Email: info@drbrambedkarcollege.ac.in; brambedkarcollege.du@gmail.com;
principal@drbrambedkarcollege.ac.in; www.drbrambedkarcollege.ac.in

drbrac @bhim_ambedkar brambedkarcollege DrBRAC DU DrBRAC DU

Ref: BRAC/PO/2024-25/ Dated: 16.04.2024

प्रेस विज्ञप्ति

18 वां बाबा साहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर स्मृति व्याख्यान सम्पन्न

दिल्ली के यमुना विहार इलाके में स्थित डॉ. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय का 18 वां बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति व्याख्यान सम्पन्न हो गया. दिल्ली विश्वविद्यालय का यह महाविद्यालय पिछले अठारह वर्षों से अम्बेडकर जयन्ती के मौक़े पर स्मृति व्याख्यान का आयोजन करता आया है जिसमें सामयिक संदर्भों से जोड़ते हुए डॉ. अम्बेडकर के जीवन एवं चरित के विविध पहलुओं पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाते हैं. इस कड़ी में इस वर्ष "राष्ट्र निर्माण में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भूमिका" विषय पर यह व्याख्यान आयोजित किया गया.

कार्यक्रम की रूप-रेखा प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम- सह संयोजक प्रोफेसर संगीता शर्मा ने महाविद्यालय को डॉ. अम्बेडकर की आकांक्षा स्थली बताया. कार्यक्रम संयोजनक डॉ. अरविन्द यादव ने कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत के साथ इस बात पर जोर देते हुए कहा कि बाबा साहेब जिस राष्ट्र का सपना देखा करते, उसमें अधिकार के स्तर की समानता केन्द्र में है, बिना इसके एक राष्ट्र समतामूलक समाज के तौर पर विकसित नहीं हो सकता. अतिथि वक्ताओं का औपचारिक स्वागत एवं शिक्षक-छात्रों को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आर. एन. दूबे ने कहा कि बाबा साहेब एक ऐसी शख़्सियत रहे हैं जिनके जीवन एवं योगदान के कई अनछुए पहलू हैं जिन पर लगातार शोध एवं परिचर्चा किए जाने की आवश्यकता है. उन्हें याद करने का सही तरीका किसी एव वर्ग विशेष की ओर से पूजा किया जाना नहीं बल्कि समस्त भारतीयों को श्रम कानून, लैंगिक भेदभाव उन्मूलन एवं मजबूत राष्ट्र की परिकल्पना जैसे अलग-अलग मुद्दों को लेकर उनकी समझ, दर्शन, राजनीति और वैचारिकी को रेखांकित करते रहना है. आनेवाले दिनों में हमारी कोशिश रहेगी कि हमारे सभी शिक्षक उनके संदेशों और शोध के वाहक के तौर पर लोगों के बीच उपस्थित रह सकें.

व्याख्यान के विशिष्ट वक्ता एवं डॉ. अम्बेडकर की राजनीति में पीएच.डी.- राजनीति विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर राजकुमार फुलवारिया ने बताया कि डॉ. अम्बेडकर एक विराट दर्शन है, ऐसे में उनके योगदान को किसी एक क्षेत्र या वर्ग तक सीमित करने देखना, उनके इस रूप को छोटा करना है. राष्ट्र निर्माण में भूमिका के कई स्तर होते हैं. औपनिवेशक भारत में अंग्रेजों के ख़िलाफ जंग यदि राष्ट्र निर्माण में योगदान देना है तो उन्हीं अंग्रेजों की आर्थिक नीति और टैक्स वसूली को लेकर गहन अध्ययन कर उनकी आलोचना करना और उनके ही संस्थान से अध्ययन करते हुए उन्हें दुनिया के सामने लाना भी कम बड़ा योगदान नहीं है. बाबा

साहेब ने अपने उच्चतर अध्ययन और राजनीति के साथ-साथ आर्थिक मामले पर शोध के जरिए, श्रम कानून, आधी आबादी की सुरक्षा एवं हिन्दू कोड बिल की ज़रूरत को समझते हुए राष्ट्र निर्माण के स्वर को जिस रूप में आगे बढ़ाया, उन्हें नए सिरे से समझने और उनका प्रसार करने की ज़रूरत है.

मुख्य वक्ता एवं अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग, दिल्ली के अध्यक्ष जगदीश यादव ने डॉ. अम्बेडकर दे जीव संघर्ष एवं उनके दौर की विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कहा कि आज देश का प्रत्येक वयस्क नागरिक जो मतदान का अधिकार रखता है, वह बाबा साहेब की सोच का परिणाम है. जिस दौर में वो हिन्दू कोड बिल लेकर आए, मौज़ूदा सरकार पितृसत्तात्मक सोच से लड़ने के लिए तैयार न थी लेकिन बाबा साहेब की स्त्री अधिकारों को लेकर इतना प्रखर स्वर रहा कि देर-सवेर सरकार को उसे अपनाना पड़ा. राष्ट्र निर्माण में उनका योगदान हमें नागरिक के तौर पर देखे जाने में है.

इस मौक़े पर महाविद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर पंकज त्यागी ने डॉ. अम्बेडकर के उन पांच सूत्र को याद रखने की ज़रूरत पर बल दिया जिनमें शिक्षित बनो, वो शिक्षा ग्रहण करो जो राष्ट्र और समाज के हित में है, सही कार्य करो, कानून का पालन करो और जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाय, प्रयासरत रहो शामिल है.

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति व्याख्यान, महाविद्यालय के उन महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में से है जिनमें शिक्षक एवं छात्र सहित समस्त कर्मचारियों की सक्रिय भूमिका रहती है. कार्यक्रम के अंत में डॉ. रविन्द्र सिंह ने सबका धन्यवाद ज्ञापन करते हुए इस कथन को पुन: याद दिलाया कि यहां से पढ़कर निकले छात्र जब पेशेवर जीवन में प्रवेश करें तो यहां की छाप उनमें हो और वो समस्त नागरिकों के साथ बराबरी और भाईचारे का व्यवहार करें. यहां से शिक्षित होने का अर्थ बाबा साहेब के संदेशों के साथ जीना है.

मीडिया प्रभारी